रामदेव धुरंधर की रचनाओं में जीवन के यथार्थ का वर्णन

सुमन फुलारा
शोधार्थी हिन्दी विभाग
एम0बी0पी0जी0 कालेज, हल्द्वानी।
कुमाऊ विष्वविद्यालय (नैनीताल)।

शोध सांराश

आज हिन्दी साहित्य की गद्य विद्याओं में प्रचुर लेखन हो रहा है, यहां उपन्यास, कहानी, कविता, नाटक, यात्रावृत, संस्मरण, निबंध,, जीवन के अतिरिक्त कई विधाओं में साहित्य सृजन हो रहा है। साहित्य के इस विशाल सागर में अनेक शाखाओं में एक शाखा प्रवासी हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने तथा लोकप्रियता के शिखर पर ले जाने में एवं प्रवासी की संस्कृति, रहन–सहन एवं उस भू–भाग से जुड़े जनमानस की स्थिति से अवगत कराने में साहित्य जगत महत्वूपर्ण कार्य कर रही है।

यह सत्य प्रतीत होता है कि प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन परंपरा की शुरूआत मॉरिशस से हुई थी यह एक भिन्न देश है जो भौतिक रूप से भारत और विश्‍व के लिए विदेश है परंतु मॉरिशस के लिए अकाट्य सत्य यह भी है कि यह भारतीय संस्कुति का संवाहक है, भारतीय मजदूर जो भोजन की तलाश में नीलाभ के उस पार तक गए और दासता की जंजीरों में हमेशा के लिए जकड़ लिए गये वे गुलामों का जीवन व्यतीत करने, तन से पराधीन थे पर मन से स्वदेशी, दूसरी संस्कृति उनके ऊपर पूरी तरह से हावी थी इसलिए वे कभी–कभी अपने जीवन के दुख–दर्द को कागज पर उतार देते थे, जो प्रवासी हिन्दी साहित्य दासता की संघर्षात्मक गाथा का दस्तावेज बनकर उकरता है।

प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में एक नाम मॉरिशस के प्रसिद्ध कथाकार, व्यंग्यकार एवं उपन्यासकार लेखक रामदेव धुरंधर जी का है जिन्होंने मॉरिशस में अपने भोगे हुए यथार्थ को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया है।

जीवन किसी एक घटना या व्यक्ति का नही होता बल्कि यह किसी मनुष्य के जन्म से लेकर उसके अस्तित्व काल तक निरन्तर घटित होने वाली घटनाओं का संकलित पर्याय होता है। इसकी न तो कोई निश्‍चित परिभाषा हो सकती है औन न ही कोई अभिधात्मक अर्थ। मनुष्यों के भाव, विचार, अनुभूति, वेषभूषा, संस्कृति, संस्कार, परम्पराएं सामाजिक संबध , मानव मूल्य, अधिकार, कर्तव्य तथा नैतिकता आदि जीवन के अन्तर्गत ही आते है अर्थात जीवन का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक होता है। चाहे वह मनोगत हो या विचारगत, साहित्यकार द्वारा अपने परिवेश में जीवन के इन अंगों को जिस रूप में देखों

अथवा अनुभव किया जाता है उन्हें ठीक उसी रूप में अपनी रचनाओं में अवतीर्ण कर देना ही जीवन का यर्थाथ वर्णन कहलाता है।

इसके लिए साहित्यकार का यथार्थवादी एवं निडर होना आवश्यक होता है क्योंकि विकृतियों का जन्म सदैव अधिकार संपन्न लोगों की कुत्सित विचार व्यवस्था से ही होता है और उनके खिलाफ लिखना अपने सर किसी बला के मोल लेने से कम नही होता है। अंसगतियों के यथार्थ चित्रण के पीछे साहित्यकार की मंशा साधारण जन जीवन से सहानुभूति के साथ प्रभुत्वसंपन्न लोगों को कर्तव्य परायण बनाने की होती है। जिसके लिए उसमें दृढ़ता और सामाजिक चेतना अनिवार्य होती है।

रामदेव धुरधंर ऐसे ही यथार्थवादी परम्परा के लेखक है जिनका सम्पूर्ण साहित्य मानव जीवन के विविध पक्षों के चित्रण से परिपूर्ण है। इनके लेखनी से जीवन का कोइ भी अंग अभिव्यक्ति पाने से वंचित नही रह सका है। यदि उनकी रचनाओं को यथार्थवाद की वैचारिक प्रयोगशाला कहा जाए तो इसमें अतिश्योक्ति नहीं होगी उनकी कृतियों में आए पात्रों के नाम तथा चरित्र आदि समाज में रहने वाले किसी व्यक्ति के ही होते हैं तथा उनके कार्य—व्यवहार दैनंदिनी जीवन से लिए गये होते हैं उदाहरण के तौर पर कहानी (विष मंथन) के लिए राजन के पिता की मृत्यु के पश्चात् उसके चाचा द्वारा अपने बड़े भाई के हिस्से की जमीन हड़प लेना केवल व्यक्ति विशेष का ही नही अपितु वर्तमान समाज के एक बडे तबके की विकृति मानसिकता का बोध कराता है। लेखक ने विषय को और अधिक गम्भीर तथा यर्थाथ बनाने के लिए आत्मकथानात्मक शैली का सहारा लिया है। बड़े भाई के हिस्से की जमीन हड़प लेने के लिए जमीन आसमान एक करता रहा था। माँ को बदनियती का पता बहुत बाद में चला था। पर जब चाहे वह सांप के जहर को समझने के योग्य हुई तब तक बहुत देर हो चुकी थी चाचा ने पूरी जमीन को एक दिन अपनी संपत्ति घोषित करते हुए कुटिल मुस्कान से मा को चौंका दिया था''1 आज के समय में पारिवारिक संबंधों में पनने स्वार्थ ने राजन की मॉ जैसी उन तमाम स्त्रियों को बेबस लाचार तथा आर्थिक रूप से विपन्न बना दिया है। जो या तो आत्मनिर्भर नही है या जो विधवा जीवन व्यतीत करने को विवश है। राज के चाचा जैसे चरित्र ने सामाजिक कीड़े हैं जो जगह जगह फैले होते हैं तथा ऐसे मौके की तलाश में रहते है। वर्तमान समाज जितना अधिक शिक्षित और आधुनिक होता गया पारिविारिक संबंधों में उतना ही अधिक बिखराव आने लगा परिवार में कलह तथा घुटन आदि अर्न्तवृत्तियों का जन्म हुआ और इससे संबंधों में उदासीनता, स्वार्थीपन एवं अकेलेपन की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती गई जिससे नित्य प्रति होने वाली लड़ाईया साधारण बात हो गयी सुहासी और उसकी सास के बीच होनेवाले झगड़े का एक दृश्य दर्शनीय है ''सुहासी इतना बोल रही थी तो सास ने अपने बेटे को आश्वासन दिया कि वह सुहासी का कलेजा खींचकर रहेगी और उसके इंगलैण्ड जाने का सपना तो हर हालत में पूरा होगा पर सुहासी वकील का नाम ले रही थी तो सास इसे हंसी में टाल नही सकी। यदि

कुछ हो जाय तो किए – कराए पर पानी फिर जाएगा उसने इसी बहाने से कजली को फोन किया था। कजली अपनी बेटी को वकील के चक्कर में पड़ने से रोक ले''2

उपनिवेशकाल भारत और मॉरिशस की परिस्थितियां लगभग समान थी चाहे वह राजनैतिक नियन्त्रण की बात हो अथवा आर्थिक शारीरिक और मानसिक शोषण की, स्वार्थ के लिए उत्पन्न किया गया धार्मिक संघर्ष हो या फिर देश की एकता को खण्डित करने के लिए अपनी भाषा को बलात थोपने की रीति अलग–अलग धर्म के लोगों को आपस में लड़ने की नीति रही हो अथवा उनकी ईसाईकरण की प्रस्तुति, यूरोपीय व्यापारियों और उपनिवेशवादी शाासकों ने भारत और मॉरिशस पर एक समान अस्त्र का प्रयोग किया, इन सब में भाषाई भेदभाव सर्वोपरि था। भारतीय समाज पर यदि अंगेजी को थोपकर उसकी एकता और राष्ट्रीय आन्दोलनों को कुचलने का प्रयास किया गया तो वही मारीच देश में फ्रेंच को अधिकारिक भांषा घोषित करके एक तरह से अभिव्यक्ति की आजादी पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया गया । उपन्यास '' पथरीला सोना'' मे देशराज और काशी के बीच किए गए कथोपकथन इस पीड़ा की मर्मान्तक अभिव्यक्ति हुई है। '' देशराज में हुई बेइज्जती की चर्चा करतके समय देशराज बेहत रूआंसा था। काशी को उन्हें फ्रेंच और क्रियोल के इस पचड़े में उलझाकर मानसिक ताप दे जाने वालों पर क्रोध आया। उन्होंने कहा तुम भाषा में कगाल नही हो, भारत से तुम्हारे साथ जो भाषा आई है वह भाषा तो असाधरण है यहां केवल इतना हो रहा है कि जिसके हाथ में सत्ता है वह अपनी इच्छा से सबको हॉक रहा है हमारे भारत में भी तो यही हो रहा है। अंतर केवल इतना है कि यहॉ फ्रंच से हमें विवश बनाया जाता है। और वहां अंग्रजी से.......... जिस भाषा में मेरी शक्ति है यदि इसी भाषा में वहॉ लड़ाई छिड़ती तो में उन्हें बताकर रहता कि मैं कौन हूं।''3

धुरधंर जी आजादी से पूर्व तथा बाद के मॉरिशस की परिस्थितयों के प्रत्यक्षदर्शी साहित्यकार हैं उन्हें अपने दादा–परदाओं से भी समाज व देश की दारूण अवस्था की अश्रुपूर्ण गाथा विरासत में मिली थी। जो अभी तक उनके मन–मस्तिष्क को किसी न किसी रूप में उद्देलित करती रहती है तथा जिसके परिणाम में उन्होंने पथरीला सोना जैसे वृत् उपन्यास की रचना की उपनिवेशयुगीन मॉरिशस में बड़े पैमाने पर भारत से गिरकिटया मजदूरों को यहॉ लाया गया और उनके साथ दासों जैसा व्यवहार किया गया। प्रवासी भारतीयों की दुर्दषा पर अनेक साहित्यकारों ने अपनी लेखनी चलाई है लेकिन धुरधंर जी का उपन्यास 'पथरीला सोना' प्रवासी भारतीय मजदूरों की गाथा बया करने वाला महाकाव्य है। इसमें श्रमिको का जीवन यथार्थ रूप में चित्रलिखित सा हो गया है। इसी तरह का एक और उपन्यास 'पूछों इस माटी से'' से भारत से मॉरिषस लाये गये प्रवासियों की व्यथा–कथा कहने वाला उपन्यास है। गोरौं का अत्याचार, षिषुओं की कातखाणी स्त्रियों की निर्भीकता व विवषता आदि का चंद षब्दों में किया गया मार्मिक वर्णन हुद्य को द्रवित एवं आंसुओं से नेत्रों को नम कर देने वाला है। ''कोई भी औरत या जवान लड़की घर के भीतर छिपने नहीं भागी अबोध बच्चों ने अलबत्ता अपनी मांओं के आंचल खीचकर

उन्हें आती हुई भयंकरता से अवगत करना चाहा पर मांए तो अवगत थी उस भयंकरता से तो इन माओं को क्या हो गया जो इस तरह चुपचाप खड़ी है? गोरों का डर नही रहा इन्हें? या घोड़ों के नीचे कुचल जाना इन्हें स्वीकार्य हो गया? नही, माँ इस तरह अपनी जान की बाज मत लगाओ ये गोरे बड़े निर्दयी हें भागकर कही छिप जाओं मां...4''

राजनीति किसी समाज अथवा व्यक्ति के जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग होती है लेकिन दुर्भाग्यवश उसकी भूमिका सदैव ही संदेहास्पद रही है। इसका वर्तमान स्वरूप तो और अधिक जटिल हो गया है तथा यह केवल चुनाव जीतकर सत्ता हथियाने का साधन मात्र होकर रह गयी है । वैसे तो राजनीतिक विसंगतियां हमेशा से ही साहित्यकारों का लक्ष्य बनती आयी है लेकिन धुरधंर जी ने इस क्षेत्र में कुछ मौलिक प्रयास भी किये। इन्होंने अपनी व्यग्य रचनाओं तथा लघुकथाओं में स्वतन्त्र रूप से राजनीतिक अनीतियों व अत्याचारों को कथानक बनाकर अधिसख्य रचनाएं की वैसी भी राजनीति इनकी सर्वाप्रिय विषय रही है। इसलिए उनके साहित्य में इसका उपेक्षित रहना असंभव या राजनीतिक पृष्ठभूमिक पर के रचना ' राजनीतिक अपनो के लिये में वर्तमान राजनेताओं के अन्त करण में पोषित कुप्रवृत्तियों को उजागर किया गया है जनता के ये सबक सत्ता की भूख में किसी भी हद तक जाने को तत्पर रहते हैं स्वार्थी पदलोलुप, अशीक्षित तथा कामी प्रवृत्ति के इन नेताओं को अपने ही परिवार और रिश्तेदारों का हित नजर आता है। तथा राजनीति में वंशवाद को बढ़ावा देना इनकी प्रमुखता होती है।उपरोक्त कुप्रथा का एक यथार्थ अंकन द्रव्द्रव्य है। –''उसने चाहा था कि बेईमानी के उसके पैसों से पूरा लाभ उठाकर सभी बेटे उसकी तरह हर चुनाव में छा जायें और जीतकर नामी मंत्री बने। परन्तु बेटों ने उसकी इच्छा के अनुरूप काम करके उसकी तबीयत कभी खुश नहीं कि। ज्यादा से ज्यादा बाप को चुनावों में थोड़ा सहारा दिया। आवश्यकता न भी पड़ी तो भी मारकाट की बाप की जीत जब–जब हुई उन्होंने जीत के सेहरे में अपना हिस्सा माना और बाप ने खुशी अनुभव करते हुए सोचा कि अपने को आम खाने से मतलब था। गुठली क्यों गिने? बेटे जैसे भी हो चुनाव में सहयोग देते चलें, गुंडागर्दी भी चुनाव का अहम हिस्सा है।''5 अन्य साहित्यक विद्याओं की तुलना में धुरंधर जी ने बृहत पैमाने पर लघुकथाओं की रचना की है। विभिन्न विषयों पर केन्द्रित लगभग बारह सौ लघुकथाएं उनकी लेखनी से प्रादुर्भूत हुई, जिनमें इन्होंने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों की टोह ली है दूसरी विद्याओं में जो विषय समयाभाव आदि कारणों से अनछूए रह गये थे उनका भी समावेश इनमें हो गया है।' घर फिर बनेगा' ' छोटा जीव ' 'शरीर की महत्ता' 'लाश पर अधिकार' 'तप्त ' राधा और नारी' आदि अनेक ऐसी रचनाएं हैं जिनमें जीवन की प्रत्याश विविध रूपों में मुखरित हुई है। रचना 'शून्य का आकार' में दहेज जैसी सामाजिक कुरीतियों को निम्न शब्दों में उकेरा गया है। '' एक वर्ष बाद बेटी की शादी तो हो गई, लेकिन यहां से एक नया अवरोध शुरू हुआ घर बनाने के लिए दामाद को पैसे की आवश्यकता पड़ी और वह ससुर को अपनी खाना पूर्ति का भण्डार समझ बैठा, उसकी जितनी माँग थी ससुर देने की

हालत में नही था, अब तो बात आगे बढ़ने की नौबत आ गयी दामाद ने उसकी बेटी को घर से निकाल तो नहीं दिया लेकिन अपने घर में उसका जीना दुरूह कर दिया ''6

निष्कर्ष के तौर पर धुरंधर के समग्र साहित्य में मानव जीवन का यथार्थ व्यक्त हुआ हैं उन्होंने जहां जैसा देखा तथा जो महसूस किया उसको उसी रूप में अपनी रचनाओ में अवतरित कर दिया। यदि जगह–जगह काल्पनिकता का आवरण चढ़ावा उनके सिद्धांतों के विपरीत था, तो वे साहित्य में चटपनेटपन के सदत विरोधी भी थे, उन्हें जीवन के सभी पक्षों का गहन ज्ञान तथा व्यापक अनुभव था। मानव–जीवन की साधारण से साधारण तथा विशेष से विशेष घटनाओं की साहित्यिक अभिव्यक्ति किसी धुरधंर साहित्यकार द्वारा ही की जा सकती थी और इसके लिए रामदेव से अधिक उपयुक्त नाम कोई दूसरा नही हो सकता था।

सन्दर्भ–सूची

1. विष मंथन (विष–मंथन), रामदेव धूरंधर, पृ संख्या –21

2. जन्म की एक भूल (लाठी तो उसी की), रामदेव धुरंधर पृ सं0 –199

3. पथरीला सोना (प्रथम खण्ड), रामदेव धुरंधर, पृ सं0– 102,103

4. पूछो इस माटी से , रामदेव धुरंधर , पृ0 सं0– 427

5. बंदे आगे भी देख (राजनीति अपनों के लिए) रामदेव धुरंधर , पृ0 सं0 120

6. चेहरे मेरे तुम्हारे (शुन्य का आकार), रामदेव धुरंधर, पृ0 सं0 136